

आलस्य और अलबेलापन - 10

अव्यक्त बापदादा :- (03. 05. 1972)

➡ _ ➡ अभी जो समय चल रहा है वह बहुत सावधानी से चलने का है क्योंकि अभी यात्री चलते-चलते ऊंच मंजिल पर पहुंच गये हैं। तो ऊंच मंजिल पर कदम कदम पर अटेन्शन रखने की बहुत आवश्यकता होती है। हर कदम में चेकिंग करने की आवश्यकता होती है। अगर एक कदम में भी अटेन्शन कम रहा तो रिजल्ट क्या होगी? ऊंचाई के बजाए पांव खिसकते-खिसकते नीचे आ जायेंगे। तो वर्तमान समय इतना अटेन्शन है वा अलबेलापन है? पहला समय और था, वह समय बीत चुका।

➡ _ ➡ जैसे-जैसे समय बीत चुका तो समय के प्रमाण परिस्थितियों के लिए बाप रहमदिल बन कुछ-न-कुछ जो सैलवेशन देते आये हैं वह समय प्रमाण अभी समाप्त हो चुका। अभी रहमदिल नहीं। अगर अब तक भी रहमदिल बनते रहे तो आत्मायें अपने ऊपर रहमदिल बन नहीं सकेगी। जब बाप इतनी ऊंच स्टेज की सावधानी देते हैं तब बच्चे भी अपने ऊपर रहमदिल बन सके। इस कारण अभी यह नहीं समझना कि बाप रहमदिल है इसलिए जो कुछ भी हो गया तो बाप रहम कर देगा। नहीं, अभी तो एक भूल का हजार गुणा दण्ड का हिसाब-किताब चुक्त्तू करना पड़ेगा। इसलिए अभी जरा भी गफलत करने का समय नहीं है। अभी तो बिल्कुल अपने कदम-कदम पर सावधानी रखते हुए कदम में पदमों की कमा करते पदमपति बनो। नाम है ना पदमापदम भाग्यशाली। तो जैसा नाम है ऐसा ही कर्म होना चाहिए। हर कदम में देखो-पदमों की कमाई करते पदमपति बने हैं? अगर पदमपति नहीं बने तो पदमापदम भाग्यशाली कैसे कहलायेंगे? एक कदम भी पदम की कमाई बिगर न जाए। ऐसी चेकिंग करते हो वा कई कदम व्यर्थ जाने बाद होश आता है? इसलिए फिर भी पहले से ही सावधान करते हैं।

➡ _ ➡ अन्त का स्वरूप शक्तिपन का है। शक्ति रुप रहमदिल का नहीं होता है। शक्ति का रुप सदैव संहारी रुप दिखाते हैं। तो संहार का समय अब समीप आ रहा है। संहार के समय रहमदिल नहीं बनना होता है। संहार के समय संहारी रुप धारण किया जाता है। इसलिए अभी रहमदिल का पार्ट भी समाप्त हुआ। बाप के सम्बन्ध से बच्चों का अलबेलापन वा नाज सभी देखते हुए आगे बढ़ाया, लेकिन अब किसी भी प्रकार से पावन बनाकर साथ ले जाने का पार्ट है सतगुरु के रुप में। जैसे बाप बच्चों के नाज वा अलबेलापन देख फिर भी प्यार से समझाते चलाते रहते हैं। वह रुप सतगुरु का नहीं होता। सतगुरु का रुप जैसे सदगुरु है - वैसे सत संकल्प, सत बोल, सत कर्म बनाने वाला है। फिर चाहे नालेज द्वारा वा पुरुषार्थ द्वारा बनावे, चाहे फिर सजा द्वारा बनावे। सतगुरु नाज और अलबेलापन देखने वाला नहीं है। इसलिए अब समय और बाप के रुप को जानो। ऐसे न हो-बाप के इस अन्तिम स्वरूप को न जानते हुए अपने बचपन के अलबेलेपन में आकर अपने आपको धोखा दे बैठो। इसलिए बहुत सावधान रहना है।

➡ _ ➡ शक्तियों को अभी अपना संहारी रुप धारण करना चाहिए। जैसे दिखाया हुआ है - कोई भी आसुरी संस्कार शक्तियों का सामना नहीं कर सकता। यदि आसुरी संस्कार वाले शक्तियों के सामने आंख उठाकर देख नहीं सकते। तो ऐसे संहारी रुप बनकर स्वयं में भी आसुरी संस्कारों का संहार करो और दूसरों के भी आसुरी संस्कार के संहार करने वाले संहारीमूर्त बनो। ऐसी हिम्मत है? माता रुप में भल रहम आ जाता, शक्ति रुप में रहम नहीं आता। माता बनकर पालना तो बहुत की और माता के आगे बच्चे लाडकोड करते भी हैं। शक्तियों के आगे किसकी हिम्मत नहीं जो अलबेलापन दिखा सके। अपने प्रति भी अब संहारी बनो। ऐसी स्टेज बनाओ जो आसुरी संस्कार संकल्प में भी ठहर न सकें। इसको कहते हैं - एक ही नजर से असुर संहारनी।

➤➤ अभी का समय सावधानी से चलने का समय है

➤ _ ➤ क्योंकि यात्री चलते-चलते ऊंच मंजिल पर पहुँच गए

→ कदम-कदम पर अटेंशन रखना है

→ ऊंचाई पर खतरा ज्यादा है

→ हर कदम पर चेकिंग करना है

→ चेकिंग पावर, चेंजिंग पावर

■ कईयों में चेकिंग पावर है पर चेंजिंग पावर नहीं

■ कमियों का चिन्तन करते दुखी हो जाते, छूट नहीं पाते

■ स्वयं के कई रूप दिखते हैं जो भयभीत हो जाते हैं-

▶ सुबह अमृतवेला योग करने वाला योगी हूँ?

▶ अच्छे से मुरली सुनने वाला स्टूडेंट हूँ?

▶ सारे दिन भर साथियों से युद्ध करने वाला योद्धा हूँ?

▶ मैं- मैं की मशाल लिए भागने वाला?

▶ स्वयं स्वयं को धोखा देना

■ कदम-कदम सावधानी से चलना है, नहीं तो आत्म ग्लानि होगी

■ सारा ज्ञान होते हुए भी गफलत करते हैं, फिर दुखी होते

→ ये तलवार की धार पर चलने वाला मार्ग है

→ सहज राजयोग (धधकती हुई अग्नि पर चलने का मार्ग)

→ बार- बार स्वयं स्वयं को देखना है, चेकिंग करना है

→ संकल्प मात्र भी अपवित्रता का अंश ना हो

➤➤ अभी समय सम्पूर्णता के समीप है

➤ _ ➤ अभी बाप रहमदिल नहीं है

→ अभी बाप के रहमदिल स्वरूप को मर्ज कर धर्मराज के स्वरूप

को इमर्ज करो

→ अभी पश्चाताप कर लो तो बाद में दंड नहीं भुगतना पड़ेगा

■ स्वयं स्वयं को सजा देना है- दो बार मुरली लिखो, आत्मा देखो

→ जो कुछ भी हो गया तो बाप रहम नहीं करेगा

→ एक भूल का हजार गुणा दण्ड का हिसाब-किताब चुकतू करना पड़ेगा

→ अभी गफलत करने का समय नहीं है

■ जानबूझकर श्रीमत, मर्यादा का उल्लंघन करने से सजा ज्यादा है

➤ _ ➤ कदम कदम पर सावधानी

→ कदम अर्थात हर संकल्प, बोल, कर्म, श्वांस, दृष्टि, वृत्ति, कर्तव्य, भाव (भाई-भाई), भावना (शुभ)

→ कदम में पदमों की कमाई करते पदमपति बनना है

→ जो भी संकल्प किए उससे विश्व का कल्याण हो जाए, ऐसा ऊँचा

संकल्प हो

■ चेकिंग करना - व्यर्थ, नेगेटिव और परचिन्तन में क्या कमाई

जमा हो रही?

» _ » अभी सद्गुरु के रूप में पार्ट है

→ सद्गुरु रहम नहीं करते, कैसे भी करके बच्चों को तैयार करते हैं

→ सद्गुरु अंधकार को दूर करता है

→ चाहे नालेज द्वारा, पुरुषार्थ या सजा द्वारा कैसे भी तैयार करते हैं

→ सद्गुरु नाज और अलबेलापन नहीं देखता है

■ अभी समय और बाप के रूप को जानना है

■ समय हमारे लिए रुका हुआ है

■ सावधान रहना है

➤➤ शक्तियों को अपना संहारी रूप धारण करना है

» _ » शक्ति रूप जब धारण करती है तो वहां रहम नहीं होता

→ आसुरी संस्कारों, विकारों, आलस्य, मोह का संहार करना है

■ जिसमें मोह हो वहां विकराल रूप धारण करना है

» _ » माता रूप में प्यार से पालना की

→ माता के आगे बच्चे लाड प्यार करते हैं

» _ » शक्तियों के आगे किसकी हिम्मत नहीं जो अलबेलापन दिखा सके

» _ » अपने प्रति संहारी बनना है

→ स्वयं के प्रति निर्दय बनना है

→ खुद को बहुत चला लिया अब निर्दय बनो

» _ » ऐसी स्टेज बनाना है जो आसुरी संस्कार संकल्प में भी ठहर ना सके

→ विकार के, काम के संस्कारों से परे हो जाएं

→ देह और देह के आकर्षण समाप्त हो जाए

→ देह का सौंदर्य सौंदर्य ना लगे, भ्रमित करने वाला लगे

■ वास्तविकता को नहीं देखते इसलिए भ्रमित हैं

▶ इस तन में रोग, बीमारी, बुढ़ापा आएगा

→ सारा कार्य संकल्पों के लेवल में करना है

■ योग का प्रयोग - स्वयं स्वयं को साक्षी होकर देखना है

■ कम से कम संकल्प हों तब आत्मा शक्तिशाली होती है

→ एक ही नजर से असुर संहारनी

■ सोचो हमारी कमजोरी या विकार राक्षस का रूप धारण किया है

■ यहाँ से योग की अग्नि का गोला भेजो और विकार समाप्त
